Downloaded from www.studiestoday.com

पूरक पुस्तक - अंतराल

सूरदास की झोपड़ी

-प्रेमचन्द

स्मरणीय बिन्दु

सूरदास की झोपड़ी 'प्रेमचन्द के उपन्यास' रंगभूमि' का एक अंश है। 'सूरदास' इस का मुख्य पात्र है। वह अंधा है तथा भिक्षा माँग कर अपना निर्वाह करता है। उसके साथ एक बालक मिठुआ भी रहता है। उसे गांव के जगधर और भैरों अपमानित करते रहते है।? भैरों की पत्नी का नाम सुभागी है। भैरों उसे मारता-पीटता है। वह ताड़ी पीता है और नशे में चूर होकर सुभागी को पीटकर अपना पुरुषार्थ दिखाता है। उसकी मारपीट से तंग आकर सुभागी सूरदास की झोपड़ी में शरण ले लेती है। भैरों उसे मारने सूरदास की झोपड़ी में घुस आता है किंतु सूरदास के हस्तक्षेप के कारण उसे मार नहीं पाता। इस घटना को लेकर पूरे मोहल्ले में सूरदास की बदनामी होती है। जगधर और भैरों सूरदास के चरित्र पर उंगली उठाते हैं। इस घटनाचक्र से सूरदास फूट-फूटकर रोता है। जगधर भैरों को उकसाना है क्योंकि वह सूरदास से ईर्ष्या करता है। सूरदास और सुभागी के संबंधों को लेकर पूरे मोहल्ले में हुई बदनामी से भैरों स्वयं को अपमानित अनुभव करता है और बदला लेने का निश्चय करता है। एक दिन वह सूरदास के रुपयों की थैली उठा लाता है तथा रात को झोपड़ी में आग लगा देता है।

सूरदास की झोपड़ी में आग लगने पर जगधर उससे पूछता है- ''सूरे, क्या आज चूल्हा ठंडा नहीं किया था?'' इस पर सूरदास व्यंग्य में उत्तर देता है- चूल्हा ठंडा किया होता, तो दुश्मनों का कलेजा कैसे ठंडा होता?'' सूरदास की मन:स्थिति अत्यंत निराशाजनक थी। उसे उसकी जीवन भर की पूंजी के जल जाने का गम था। इससे उसकी सारी योजनाओं पर पानी फिर गया था। अब उसे अपनी सारी मनोकामनाएं बिखरती नजर आ रही थी। वह बहुत दु:खी था, विस्मित था तथा निराशा, ग्लानि चिंता और क्षोभ के सागर में गोता लगा रहा था। इसके बावजूद उसे मन में किसी से बदला लेने की भावना न थी।

सूरदास की झोपड़ी फूस की बनी हुई थी। इस झोपड़ी के साथ गहरा लगाव था। झोपड़ी के साथ ओर सूरदास की अभिलाषाओं का अंत हो गया था। सूरदास संचित धन से पितरों का पिडंदान करना चाहता था, मिठुआ का ब्याह और गाँव के लिए एक कुआं बनवाना चाहता था। उसकी झोंपड़ी

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

में आग लग जाने से अब उसकी यह जमा पूँजी भी नष्ट हो गई। झोंपड़ी के जल जाने के बाद जो राख शेष बची थी। वह देखने में फूस की राख थी, पर वास्तव में वह इन अभिलाषाओं की राख थी जो इसके साथ दफन हो गई थी।

सूरदास जगधर से अपनी आर्थिक हानि को गुप्त रखना चाहता था क्योंकि एक अंधे भिखारी के लिए गरीबी इतनी लज्जा की बात नहीं, जितना धन का होना। इसलिए रुपयों की थैली को अपना मानने से इंकार कर देता है। भैरों द्वारा रुपये चुराए जाने पर सूरदास सोच रहा था– रुपये मैंने ही तो कमाए थे, क्या फिर नहीं कमा सकता? यही न होगा, जो काम इस साल होता, वह कुछ दिनों के बाद होगा, वे मेरे रुपये थे ही नहीं. शायद पिछले जन्म से मैंने भैरों के रुपये चुराए होंगे। यह उसी का दंड मिला है। यही सोचकर सूरदास अत्यंत दु:खी था। तभी उसे घीसू द्वारा मिठुआ को यह कहते सुनाई पड़ा– 'खेल में रोते हो।' यह चेतावनी सुनते ही सूरदास को ऐसा लगा जैसे किसी ने उसका हाथ पकड़कर किनारे पर खड़ा कर दिया हो। उसे लगा कि यह जीवन भी तो एक खेल है और मैं इस खेल में रो रहा हूं। सच्चे खिलाड़ी कभी नहीं रोते, बाजी हारते हैं, चोट खाते है, धक्के सहते है, पर मैदान में डटे रहते हैं। खेल में रोना कैसा? खेल हंसने व दिल बहलाने के लिए है, रोने के लिए नहीं। वह उठ खड़ा हुआ विजय-गर्व की तरंगब के साथ झोपड़ी की राख के ढेर को दोनों हाथों से उड़ाने लगा। अब उसकी मनोदशा उस खिलाड़ी के समान हो गई जो एक बार हारने के बाद पुन: पूरे उत्साह से खेल को जीतने के लिए कमर कस लेता है।

मिठुआ सूरदास से पूछता है कि क्या हम बार-बार झोपड़ी बनाते रहेंगे तब सूरदास 'हाँ' में उत्तर देता है। अंत में मिठुआ पूछता है– और जो कोई सौ लाख बार (आग) लगा दे? तब सूरदास सरलता से उत्तर देता है– ''हम भी सौ लाख बार बनाएंगे।'' इस कथन के आधार पर हम कह सकते हैं कि सूरदास में निर्णय लेने की क्षमता है, हार न मानने की प्रवृत्ति है, कर्मशील है, मन में प्रतिशोध लेने की भावना नहीं है, ग्रामीण जीवन एवं संघर्ष का प्रतीक, सहृदय एवं परोपकारी, दायित्व का पालनकर्ता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. चूल्हा ठंडा किया होता, तो दुश्मनों का कलेजा कैसे ठंडा होता? इस कथन के आधार पर सूरदास की मन:स्थिति का वर्णन कीजिए।
2. जगधर के मन में किस तरह ईर्ष्या का भाव जगा और क्यों?
3. सूरदास जगधर से अपनी आर्थिक हानि को गुप्त क्यों रखना चाहता था?
4. भैरों द्वारा रुपये चुराए जाने पर सूरदास क्या सोचता है?
5. भैरों ने सूरदास की झोपड़ी क्यों जलाई?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

6. सूरदास ने रुपयों किन-किन कामों के लिए जमा किए थे?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

1. सूरदास की झोपड़ी से लगने वाली आग की तुलना किससे की गई है, और क्यों?
2. सूरदास की झोपड़ी में आग किसने लगाई यह जानने के लिए जगधर क्यों बेचैन था?
3. सच्चे खिलाड़ियों के विषय में लेखक के क्या विचार है?
4. सुभागी रात भर कहां छिपी रही थी? उसे क्या दु:ख था?

निबंधात्मक प्रश्न

1. ''यह फूस की राख न थी, उसकी अभिलाषाओं की राख थी।'' संदर्भ सहित विवेचना कीजिए।
2. 'सूरदास उठ खड़ा हुआ और विजय-गर्व की तरंग में राख के ढेर को दोनों हाथों से उड़ाने लगा' इस कथन के संदर्भ में सूरदास की मनोदशा का वर्णन कीजिए।
3. 'तो हम सौ लाख बार बनाएंगे।' इस कथन के संदर्भ में सूरदास के चरित्र की विवेचना कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

1. झोपड़ी की राख ठंडी होने पर सूरदास ने राख में क्या टटोला। उसका किसी से प्रतिशोध न लेना क्या इंगित करता है? पाठ के आधार पर समझाइए।
2. जगधर द्वारा पैसे लौटाने की बात करने पर भैरों ने क्या-क्या तर्क दिए। सूरदास के विषय में उनकी क्या विचारधारा थी?
3. 'अब चाहे वह मुझे मारे या निकाले पर रहूँगी उसी के घर'-कथन के संदर्भ में सुभागी के चरित्र की विवेचना कीजिए।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

आरोहण

- संजीव

स्मरणीय बिन्दु

'आरोहण' संजीव की एक ऐसी कहानी है जो पहाड़ी क्षेत्रों के मेहनतकश लोगों की जिंदगी को रेखांकित करती है। आरोहण कहानी में लेखक ने पर्वतारोहण की जरूरत और वर्तमान समय में उसकी उपयोगिता को रेखांकित किया है। पर्वतीय प्रदेश के रहने वालों के जीवन-संघर्ष तथा प्राकृतिक परिवेश से उनके संबंधों को चित्रित किया है। उसने दर्शाया है कि किस तरह पर्वतीय प्रदेशों में प्राकृतिक आपदा, भूस्खलन, पत्थरों के खिसकने से वहाँ का पूरा जीवन एवं समाज नष्ट हो जाता है। 'आरोहण' पहाड़ी लोगों की जीवनचर्या का भाग है, किन्तु आश्चर्य तब होता है जब उन्हें यह पता चलता है कि यही आरोहण उनकी आजीविका का प्रबंध भी कर सकता है। इस कहानी में इस बात का भी वर्णन है कि मैदानी भागों की तुलना में पर्वतीय प्रदेशों की जिंदगी कितनी कठिन, जटिल, दुखद और संघर्षमय होती है।

प्राय: लोग रोजगार की तलाश में अपना घर छोड़कर बाहर जाते ही रहते हैं और रोजगार पाकर समय-समय पर अपने घर लौटते रहते हैं। तब उनके मन में हर्ष और गर्व का भाव होता है। पर रूपसिंह जब ग्यारह वर्ष पश्चात् अपने घर लौटता है तब उस पर एक अजीब किस्म की लाज, अपनत्व और झिझक की भावना होने लगती है। वह मसूरी के पर्वतारोहण संस्थान में चार हजार रुपये महीने की अच्छी नौकरी पा गया था। जब वह गाँव लौटता है तब उसके साथ उसके गॉड फादर कपूर साहब का बेटा शेखर कपूर भी है। वे दोनों देवकुंड के स्टॉप पर उतरते है और रूपसिंह के गाँव माही जाने की योजना बनाते है। घर लौटते हुए रूपसिंह को लाज आ रही है क्योंकि वह घर से सामान्य परिस्थितियों में नहीं गया था, बल्कि बड़े भाई भूपदादा को धक्का मारकर घर से भाग गया थां अपनत्व की भावना इसलिए क्योंकि गाँव में उसका अपना परिवार रहता है। शेखर के सामने झिझक इसलिए हो रही थी क्योंकि गाँव में अभी तक पक्की सड़क नहीं बन पाई थी।

ग्यारह साल पूर्व जब गाँव में भू-स्खलन हुआ तथा भूपसिंह के माँ, बाबा, खेत, घर सब मलवे में दब गए। किसी तरह भूपदादा बच गया। कोई सहारा न होने के कारण धीरे-धीरे मलवा हटाया और थोड़ी बहुत खेती शुरू की। शैला और भूप दोनों ने मिलकर मेहनत की। दोनों के संयुक्त प्रयासों से खेती बढ़ती चली गई। बर्फ जमी न रहे, इसके लिए उन्होंने खेतों को ढलवां बनाया। हिमांग पर्वत पर चढ़कर उन्होंने झरना देखा, जो सुपिन नदी में गिर रहा था। इसे मोड़ देने से उनकी माली की समस्या

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

हल हो सकती थी। किन्तु बीच में पहाड़ था। फिर उन दोनों ने पहाड़ को काटकर बड़ी मेनहत से झरने को खेतों की तरफ मोड़ने में सफल हुए। उन्होंने अपनी मेहनत से नयी जिंदगी की कहानी लिख डाली।

सैलानी शेखर और रूपसिंह घोड़े पर चलते हुए उस लड़के के रोजगार के बारे में सोच रहे थे जिसने उनको घोड़े पर सवार कर रखा था और स्वयं पैदल चल रहा था। घोड़े वाला लड़का केवल 9-10 वर्ष का था। उसका नाम महीप था। वह अपन पिता भूपसिंह से नाराज होकर और अलग रहकर घोड़े की आय से जीवन-यापन कर रहा था। इतनी कच्ची उम्र, उस पर घोड़े वाल धंधा और ये खतरनाक रास्ते। हम जवान होकर भी घोड़े पर जा रहे हैं और यह पंद्रह किलोमीटर पैदल। यह एक प्रकार से बाल मजदूरी है। पेट के लिए इसे क्या-क्या नहीं करना पड़ता। पता नहीं यह बर्फ के दौरान क्या करता होगा? हम भी बाल मजदूरों के बारे में सोचते हैं। कोई भी बालक मजदूरी करता हुआ हमें अच्छा नहीं लगता। बच्चों की यह उम्र तो पढ़ने-लिखने और खेलने की होती है। ये ही बच्चे कल के नागरिक है देश का भविष्य हैं।

इसके पश्चात दोनों के बीच चढ़ाई की बातें होने लगी। पर्वतारोहण का प्रसंग छिड़ जाने के बाद रूपसिंह ने पत्थर की जाति का वर्णन किया। पत्थर की जाति से आशय यह है कि पत्थर किस प्रकार का है। पत्थर की जाति से ही उसकी मजबूती का पता चलता है। तभी उसमें चढ़ाई के लिए रस्सी को फंसाया जाता है। तभी सपोर्ट बनती है। पहाड़ों के विभिन्न प्रकार हैं- इग्नियस, मेटामारफिक, सिलिका, ग्रेनाइट, सैंडस्टोन। थोड़ी देर बार उन्हें पर्वतारोहण के अध्याय को बंद करके घोड़े पर बैठना पड़ा क्योंकि महीप हीरू-वीरू पर बैठने की जल्दबाजी कर रहा था। तभी रूपसिंह को शैला की याद आ गई। शैला इतनी सुंदर थी कि उसकी गुलामी बजा लाने में वह खुद को धन्य मानता, जबकि वो खुद बैठकर स्वेटर बुना करती। रूपसिंह उसकी भेंड़ें हाँका करता, उसके लिए बुरुस के फूल तोड़ लाता, जो उसे बेहद पसंद थे, सेब या आड़ू कहीं मिल गए तो सबसे पहले उसे लाकर देता। बदले में वह देवता का प्रसाद या मक्की की रोटी देती। जो स्वेटर बुना जा रहा था। वह भूप दादा के लिए था। आखिर तक उसे खुश रखने की तमाम कोशिशें बेकार चली जाती। इस 'लव स्टोरी' में वह तो राम-सीता के बीच लक्ष्मण की ही भूमिका निभा रहा था। जिस दिन भूप दादा नहीं आते थे उस दिन शैला को खुश रखने की तमाम कोशिशें बेकार चली जाती।

रूपसिंह ने मसूरी के पर्वतारोहण संस्थान में पहाड़ों पर चढ़ना भली प्रकार सीखा था। पर वहाँ वह आधुनिक उपकरणों की सहायता से पहाड़ों पर चढ़ता था। यहां सिर्फ पेड़-पत्थरों के नाम-मात्र सपोर्ट से शरीर का संतुलन बनाए रखना उसे कठिन प्रतीत हो रहा था। इसके अलावा यहां के पहाड़ और वहां के पहाड़ में अंतर भी था। यहां के पहाड़ की चढ़ाई खड़ी थी। यही कारण था रूपसिंह थोड़ी ही देर में हांफ गया था। इसक विपरीत रूप का बड़ा भाई भूपसिंह न जाने बनमानुष थे या रोबोट। वे चढ़ाई चढ़ते समय जिस धैर्य, आत्मविश्वास, ताकत और कुशलता से मांसपेशियों और अंगों का उपयोग कर रहे थे, वह रूपसिंह और शेखर के लिए हैरत की चीज थी। वे खुद तो ऊपर चढ़ ही रहे थे साथ ही अपने मफलर के सहारे रूप को भी खींचे लिए जा रहे थे। उनहें ऊपर पहुंचने

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

में घंटे भर का समय लगा। वहां रूप को छोड़कर फिर नीचे उतरे और उसी प्रकार शेखर को ऊपर लेकर आए। उनके इस साहस और आत्मविश्वास को देखकर रूपसिंह उनके सामने बौना पड़ गया था। भूपदादा स्नेहशील, धैर्यशाली, परिश्रमी था।

जब रूप सिंह ने बूढ़े तिरलोक सिंह को यह बताया कि पर्वतारोहण संस्थान पहाड़ पर चढ़ने की नौकरी के लिए उसे चार हजार रुपये प्रति मास तनख्वाह देती है तब बूढ़े तिरलोक सिंह को पहाड़ पर चढ़ना जैसी नौकरी की बात सुनकर अजीब लगा क्योंकि पर्वतीय प्रदेशों में पहाड़ पर चढ़ना आम बात है। पहाड़ी लोग प्रतिदिन न जाने कितनी बार पहाड़ों पर चढ़ते और उतरते हैं उसे लगता है कि इस काम के लिए नौकरी पर रखना और चार हजार रुपये खर्च करना सरकार की मूर्खता है।

इस कहानी को पढ़कर हमारे मन में पहाड़ों पर स्त्री की दयनीय स्थिति की छवि बनती है। वह बहुत परिश्रमी एवं कामकाजी होती है। शैला विवाह से पूर्व भेंड़े चराती थी तथा खेती का काम करती थी। उसे भूपदादा के साथ मिलकर पहाड़ों की तथा खेती का काम करती थी। उसने भूपदादा के साथ मिलकर पहाड़ों को काटकर झरने का रूख मोड़ा। खेतीबाड़ी का विस्तार किया। पहाड़ी स्त्री कम पढ़ी-लिखी, सीधी सरल किन्तु स्वाभिमानी होती है। वह छल-कपट से दूर रहती है। पहाड़ी स्त्रियां भावुक होती हैं जैसे शैला ने की थी।

पहाड़ों में जीवन अत्यंत कठिन होता है। यहाँ के निवासियों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे-पानी की समस्या, ईंधन की कमी, शिक्षा के लिए उचित साधनों की कमी, रोजगार के साधनों में कमी, स्वास्थ्य सेवाओं में कमी, बिजली की पर्याप्त सुविधा नहीं। इन समस्याओं को दूर करके उनके जीवन स्तर को सुधारा जा सकता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. पत्थर की जाति से लेखक का क्या आशय है? उसके विभिन्न प्रकारों के बारे में लिखिए।
2. बूढ़े तिरलोक सिंह को पहाड़ पर चढ़ना जैसी नौकरी की बात सुनकर अजीब क्यों लगा?
3. रूपसिंह पहाड़ पर चढ़ना सीखने के बावजूद भूपसिंह के सामने बौना क्यों पड़ गया था?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

1. रूपसिंह घर लौटते हुए किस मनः स्थिति में था और क्यों?
2. 'राम और सीता की जोड़ी में मैं सिर्फ लक्ष्मण था।' इस कथन के पीछे रूपसिंह की कौन-सी पीड़ा छिपी थी?
3. 'आरोहण' कहानी का उद्देश्य बताइए।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

4. पर्वतारोहण पर्वतीय प्रदेश के लोगों की आजीविका का साधन है। 'आरोहण' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

5. रूप ने भूपदादा को पहाड़ से क्यों धकेला था?

निबंधात्मक प्रश्न

1. पहाड़ों की चढ़ाई में भूपदादा का कोई जवाब नहीं। उनके चरित्र की विशेषताएं बताइए।

2. यूं तो प्राय: लोग घर छोड़कर कहीं नहीं जाते हैं, परदेश जाते हैं। किन्तु लौटते समय रूपसिंह को एक अजीब किस्म की लाज, अपनत्व और झिझक क्यों घेरने लगी?

3. शैला और भूप ने मिलकर किस तरह पहाड़ पर अपनी मेहनत से नई जिंदगी की कहानी लिखी?

4. सैलानी (शेखर और रूपसिंह) घोड़े पर चलते हुए उस लड़के के रोजगार के बारे में सोच रहे थे जिसने उनको घोड़े पर सवार कर रखा था और स्वयं पैदल चल रहा था? क्या आप भी बाल मजदूरों के बारे में सोचते हैं?

5. इस कहानी को पढ़कर आपके मन में पहाड़ों पर स्त्री की स्थिति की क्या छवि बनती है? उस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

1. 'पहाड़ों पर जन जीवन अत्यंत कठिन होता हैं'' पाठ के आधार पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

2. पर्वतीय प्रदेशों में भूस्खलन व पहाड़ों का खिसकना लोगों के जीवन को नष्ट कर देता है। ''आरोहण' कहानी के आधार पर विवेचना कीजिए।

3. पारिवारिक परिस्थितियों ने महीप को समय से पहले ही व्यस्क बना दिया था। इस विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

बिस्कोहर की माटी

-विश्वनाथ त्रिपाठी

स्मरणीय बिन्दु

प्रस्तुत पाठ लेखक द्वारा लिखित उनकी आत्मकथा 'नंगातलाई का गाँव' का एक अंश से लिया गया है। लेखक ने अपनी आयु के कई पड़ाव पार करने के पश्चात अपने जीवन में माँ, गाँव और आसपास के प्राकृतिक परिवेश का वर्णन करते हुए ग्रामीण जीवन शैली, लोक कथाओं, लोक मान्यताओं को पाठकों तक पहुँचाने की कोशिश की है।

कोइयाँ एक प्रकार का जलपुष्प है। इसे कुमुद और कोकाबेली भी कहते हैं। यह पानी में उगता है। शरदऋतु में जहाँ-जहाँ भी पानी होता है, कोइयाँ फूल वहाँ उग जाता है। यह फूल बिसनाथ के गाँव में बहुत होता है। शरद की चाँदनी में सरोवरों में चाँदनी का प्रतिबिंब और खिली हुई कोइयाँ की पत्तियाँ एक हो जाती है। इसकी गंध अत्यंत मादक होती है। यह मुख्यत: शरद ऋतु में होता है।

लेखक पहले यह सोचा करता था कि कोइयाँ उनके यहाँ होती है। यह भ्रम तब टूटा जब एक बार वैष्णों देवी के दर्शन के लिए जाते समय पंजाब में रेलवे लाइन के दोनों ओर इसे खिले हुए देखा। शरद में ही हरसिंगार का फूल लगता है। गाँव के बच्चे ज्ञात-अज्ञात वनस्पतियों को छूते पहचानते थे। लेखक के अनुसार बच्चे का माँ से संबंध बिलकुल अलग होता है। बच्चा जन्म लेते ही अपने भोजन के रूप में माँ का दूध ही ग्रहण करता है। इसी दूध से उसका पोषण और विकास होता है। नवजात शिशु के लिए माँ का दूध अमृत के समान है। बच्चे का माँ का दूध पीना सिर्फ दूध पीना ही नहीं, माँ से बच्चे के सारे संबंधों का जीवन चरित्र होता है। इसी दूध का बच्चे के व्यक्तित्व पर, बच्चे के संस्कारों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। बच्चा सुबकता है, रोता है, माँ को मारता है, माँ भी कभी-कभी मारती है, बच्चा माँ से चिपटा रहता है, माँ चिपटाए रहती है। माँ के पेट से रस, गंध, स्पर्श भोगता है, अपनी जगह ढूँढ़ता है। बच्चे के जब दाँत निकलते हैं तब हर चीज को दाँत से काटते हैं, यही टीसना है। चाँदनी रात में खटिया पर बैठी माँ जब बच्चे को दूध पिलाती है तब बच्चा दूध ही नहीं, चाँदनी को भी पीता है। उसे चांदनी माँ जैसी ही पुलक-स्नेह ममता देती है। माँ के अंग से लिपटकर बच्चे का दूध पीना, जड़ के चेतन होने यानी मानव जन्म लेने की सार्थकता है।

बिसनाथ अभी दूध पीता बच्चा था कि उसका छोटा भाई आ गया। उसका दूध कट गया। तब माँ के दूध पर छोटे भाई का कब्जा हो गया। बिसनाथ को पड़ोस की एक मेरिन दाई को पाला-पोसा

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

था। वे तीन बरस तक कसेरिन दाई के साथ लेटे चाँद को देखते रहे अर्थात् माँ के स्थान पर उसे कसेरिन दाई के सम्पर्क में रहना पड़ा। यह एक प्रकार से बिसनाथ पर अत्याचार था।

लेखक ने दिलशाद गार्डन के डियर पार्क में बत्तखों को देखा था। बत्तख जब अंडा देने को होती है तब पानी को छोड़कर जमीन पर आ जाती है। इसके लिए एक सुरक्षित बाड़ा था। उसने यह भी देखा कि एक बत्तख कई अंडों को से रही है। वह अपने पंख फैलाकर उन्हें दुनिया की नजरों से बचाकर रखती है। यही स्थिति माँ की भी होती है। माँ भी बच्चों का पालन-पोषण करती है उसे दुनिया की नजरों से बचाकर रखती है। बत्तख अंडों को अपनी चोंच से बड़ी सतर्कता, कोमलता से अपने डैनों के अंदर छुपा लेती है। इसी प्रकार माँ भी बच्चे को अपने अंग में छुपा लेती है। बत्तख की निगाह कौवे की ताक पर भी रहती है। बत्तख माँ और मानव-शिशु माँ की ममता अपने बच्चों पर होती है। यही दोनों में समानता है।

चिलचिलाती गर्मियों में लेखक सब को सोता पाकर भरी दोपहर में चुपचाप घर से बाहर निकल जाता। कभी लू भी लग जाती थी जिसके लिए माँ धोती या कमीज से गांठ लगाकर प्याज बांध देती थी। लू लगने पर कच्चे आम का पन्ना पिया जाता, आम को भूनकर या उबाल कर गुड़ या चीनत में उसका शरबत पीना, देह में लेपना, नहाना किया जाता था। कच्चे आम को भूनकर या उबाल कर उससे सिर धोया जाता।

बिस्कोहर में बरसात अचानक नहीं आती। पहले बादल घिरते हैं, फिर उनमें गड़गड़ाहट होती है। फिर पूरा आकाश बादलों से ऐसे घिर जाता है कि दिन में ही अंधेरा हो जाता है। तबला, मृदंग और सितार का अनूठा संगीत मिश्रित होता है। बरसात कई दिन तक होने के कारण दीवार गिर गई, घर धंस गया। बरसात आती है तब सभी पशु-पक्षी पुलकित हो उठते हैं। पहली वर्षा में नहाने पर दाद-खाज, फोड़ा-फुंसी ठीक हो जाते है। बरसात में तरह-तरह के कीड़े निकल आते हैं। कभी-कभी उमस के कारण मछलियाँ मरने लगती हैं।

घास पात से भरे मैदानों, तालाब के आसपास नाना प्रकार के साँप मिलते हैं। साँप से डर लगता है। डोंड़हा और मजगिदवा विषहीन होते हैं। डोंड़हा को मारा नहीं जाता। उसे सांपों में वामन जाति का मानते हैं। धामिन भी विषहीन है। सबसे खतरनाक गोंहुअन है जिसे फेंटाश कहते हैं। 'घेर कड़ाइच', 'भटिहा' खतरनाक साँप होते हैं।

लेखक को प्रकृति से बहुत प्रेम है। इस पाठ में अनेक प्रकार के फूलों की जानकारी दी गई है। 'फूल केवल गंध ही नहीं देते दवा भी करते हैं। गाँव में अब भी अनेक रोगों का इलाज फूलों के द्वारा किया जाता है। गाँव में फूलों की गंध से साँप, महामारी, देवी, चुड़ैल आदि का संबंध जोड़ा जाता है। गुड़हल का फूल देवी का फूल माना जाता है। नीम के पत्ते और फूल चेचक में रोगी के पास रखे जाते हैं। बेर के फूल सूंघने से बर्रे, ततैया का डंक झड़ जाता है। आम के फूल भी अनेक रोगों में दवा का काम करते हैं।

लेखक के गाँव के पूरब टोले के पोखर में कमल खिलते हैं। हिंदुओं के यहाँ भोजन कमल-पत्र पर परोसा जाता है। कमल पत्र को पुरइन भी कहते हैं। कमल की नाल को मृणाल कहते हैं।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

कमल-ककड़ी को सामान्यत: अभी भी गाँव में नहीं खाया जाता। कमल का बीज गट्टा अवश्य खाया जाता है।

लेखक अपने एक रिश्तेदार के घर बढ़नी गया था। उसने अपनी उम्र में काफी बड़ी औरत को देखा। बेशक दस वर्ष का था। वह औरत अत्यंत रूपवती थी। उस औरत के सौंदर्य का आकर्षक इस प्रकार हावी हुआ कि उसे समस्त प्रकृति में वही औरत नजर आने लगी। वह जूही की लता बन गई, चाँदनी के रूप में लगी, जिससे फूलों की खुशबू आ रही थी, तब प्रकृति सजीव नारी बन गई थी और बिसनाथ उसमें आकाश, चाँदनी, सुगंध सब कुछ देख रहे थे। प्रकृति उनके हृदय में बसी थी।

लेखक के पास अप्राप्ति की अनेक ऐसी स्मृतियाँ हैं। लेकिन जिस औरत को देखकर वह समस्त प्रकृति के सौंदर्य को भूल गया था उससे अपनी भावनाओं का इजहार न कर सका। वह सफेद रंग की साड़ी पहने रहती है। घने काले केश संवारे हैं। उसकी आँखों में पता नहीं कैसी आर्द्र व्यथा है। वह सिर्फ इंतजार करती है। संगीत, नृत्य, मूर्ति, कविता, स्थापत्य, चित्र की गरज हर कला रूप के अस्वाद में वह मौजूद है। लेखक के लिए हर दु:ख-सुख से जोड़ने की सेतु है। इस स्मृति के साथ मृत्यु का बोध सजीव तौर पर जुड़ा हुआ है।

आज माताएँ अपने नवजात शिशओं को अपना दूध नहीं पिलाना चाहतीं। इसके पीछे उनकी यह सोच है कि दूध पिलाने से शरीरिक बनावट पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा जो नौकरी करती हैं, वे अपने बच्चों को आया के सहारे छोड़ कर चली जाती हैं। जिससे बच्चे माँ के दूध से वंचित हो जाते हैं। इस प्रवृत्ति का माँ और शिशु पर बुरा प्रभाव पड़ता है। दोनों भावनात्मक रूप से नहीं जुड़ पाते हैं। दूध पिलाना स्नेह का परिचायक है। माँ का दूध बच्चे के लिए पूर्ण भोजन है।

(लघूत्तरात्मक प्रश्न)

1. कोइयाँ किसे कहते हैं? उसकी विशेषताएं बताइए।
2. विश्वनाथ पर क्या अत्याचार हो गया?
3. गर्मी और लू से बचने के उपायों का विवरण दीजिए। क्या आप भी उन उपायों से परिचित हैं?
4. लेखक बिसनाथ ने किन आधारों पर अपनी माँ की तुलना बत्तख से की है?
5. बिस्कोहर में हुई बरसात को जो वर्णन बिसनाथ ने किया है उसे अपने शब्दों में लिखिए।
6. ऐसी कौन-सी स्मृति है जिसके साथ लेखक को मृत्यु का बोध अजीब तौर से जुड़ा मिलता है?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

1. बिस्कोहर गाँव में साँपों की प्रजातियाँ कौन-सी थी? उनके विषय में सोचकर लेखक को कैसा लगता था?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

2. 'बच्चा दूध ही नहीं चाँदनी भी पी रहा है, चाँदनी भी माँ जैसी ही पुलक-स्नेह-ममता दे रही है।' आशय स्पष्ट कीजिए।

3. कमल का प्रयोग किस-किस रूप में किया जाता है?

4. करेसिन कौन थी? उसके साथ छत पर लेटकर तीन वर्ष के बिसनाथ को कैसा अनुभव होता था?

निबन्धात्मक प्रश्न

1. 'बच्चे का माँ का दूध पीना सिर्फ दूध पीना नहीं, माँ से बच्चे के सारे संबंधों का जीवन-चरित्र होता है'। टिप्पणी कीजिए।

2. 'फूल केवल गंध ही नहीं देते दवा भी करते हैं।' कैसे?

3. 'प्रकृति सजीव नारी बन गई' इस कथन के संदर्भ में लेखक की प्रकृति, नारी और सौंदर्य संबंधी मान्यताएँ स्पष्ट कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

1. वर्तमान समय समाज में माताएँ नवजात शिशु को दूध नहीं पिलाना चाहती। बच्चे के लिए माँ का दूध क्यों आवश्यक है? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

2. लेखक ने प्राकृतिक सौन्दर्य और प्राकृतिक आपदाओं का साथ-साथ वर्णन किया है। इस विरोधाभास से लेखक का क्या उद्देश्य है?

3. गाँव शहर की तरह सुविधायुक्त नहीं होते बल्कि प्रकृति पर अधिक निर्भर रहते हैं। पाठ के आधार पर ग्रामीण जीवन-शैली का वर्णन कीजिए।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

अपना मालवा : खाऊ उजाड़ू सभ्यता में

–प्रभाष जोशी

स्मरणीय बिन्दु

यह पाठ जनसत्ता के 1 अक्टूबर 2006 के 'कागद कारे' स्तंभ से लिया गया है। इस पाठ में लेखक ने मालवा प्रदेश की मिट्टी, वर्षा, नदियों की स्थिति, उद्गम एवं विस्तार तथा वहाँ के जनजीवन एवं संस्कृति को चित्रित किया है। जो मालवा अपनी सुख समृद्धि और सम्पन्नता के लिए प्रसिद्ध था, वही अब खाऊ–उजाड़ू सभ्यता में फंसकर उलझ गया है। यह सभ्यता यूरोप और अमेरिका देन हैं इस पाठ में पर्यावरण के प्रति लोगों को सचेत किया है।

मालवा में जब सब जगह बरसात की झड़ी लगी रहती है तब के जन–जीवन पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है। लोगों को आवागमन में परेशानी होती है। अब धरती ज्यादा पानी को सोख नहीं पाती है। बारिश के कारण गेहूँ ओर चने की फसल को बहुत फायदा होता है। सोयाबीन की फसल गल जाती है। कई नदियों में बाढ़ आ जाती है और उसका पानी शहरों में लोगों के घरों, दुकानों आदि में घुस जाता है। ज्यादा बरसात से लोग उकता जाते हैं।

मालवा में पहले काफी पानी गिरता था, पर अब वहां वैसा पानी नहीं गिरता। इसका एक कारण यह हो सकता है कि प्रकृति से बहुत छेड़छाड़ की जा रही है। उद्योगों से निकलने वाली गैसों ने पृथ्वी के तापमान को तीन डिग्री सेल्सियत बढ़ा दियाहै। इससे मौसम में काफी परिवर्तन आ गया है। वायु प्रदूषण भी तेजी से फैलता जा रहा है। कारखानों ने पर्यावरण को बहुत अधिक प्रदूषित कर दिया है। इससे वर्षा पर भी बुरा प्रभाव पड़ा है।

पश्चिमी शिक्षा के कारण, अति आत्मविश्वास के कारण, अज्ञानता, भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की उपेक्षा के कारण आज के इंजीनियर यह समझते हैं कि वे पानी का बेहतर प्रबंध करना जानते हैं और उनकी तुलना में पहले के लोग कुछ नहीं जानते थे। पर वे भ्रम के शिकार हैं। वे तो समझते हैं कि ज्ञान तो पश्चिम के रिनेसां के बाद ही आया। उन्हें भारतीय इतिहास की जानकारी नहीं है। मालवा में विक्रमादित्य, भोज और मुंज, रिनेसां से बहुत पहले हो गए हैं। उन्हें पानी की समस्या का हल करना आता था। ये राजा जानते थे कि इस मौसम में पानी को रोकना होगा। इसके लिए इन सबने तालाब

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

बनवाए, बड़ी-बड़ी बावड़ियां बनवाई ताकि बरसात का पानी रुका रहे और धरती के गर्भ के पानी को जीवंत रखा जा सके। हमारे आज के नियोजकों तथा इंजीनियरों ने तालाबों का महत्व नहीं समझा और उन्हें गाद से भर जाने दिया और जमीन के पानी को पाताल से भी निकाल लिया। इससे नदी-नाले सूख गए। पग-पग पर नीर वाला मालवा सूख गया।

नवरात्रि की पहली सुबह में मालवा में घट स्थापना की तैयारी है। गोबर से घर आंगन लीपने और मानाजी के ओटले को रंगोली से सजाने की सुबह है। यह समय नहाने-धोने और सजकर त्योहार मनाने में लगने का है, किन्तु आसमान में गड़गड़ाहट हो रही थी। पूरे रास्ते भर छोटे स्टेशनों पर महिलाओं की भीड़ थी। लेखक को लग रहा था कि इस बार मानसून जाते हुए भी बरसने की धौंस दे रहा है।

लेखक ने ओंकारेश्वर में देखा कि नर्मदा पर सीमेंट कंक्रीट का विशाल राक्षसी बांध बनाया जा रहा है। बांध बनाऐ जाने से उसके बहते वेग में व्यवधान उत्पन्न किया जा रहा था। नदी वेग से बहुत सुन्दर लगती है। नर्मदा के किनारे पर टूटे पत्थर उसके बहाव को रोकने की कोशिश का वर्णन कर रहे थे। ज्योतिर्लिंग का वह तीर्थ धाम वह नहीं लग रहा था जो कहा जाता है। बांध के निर्माण में लगी हुई बड़ी-बड़ी मशीनें और गुर्राते हुए ट्रक नदी के किनारे खड़े हुए थे। यही कारण है कि नर्मदा बांध बनने से चिढ़ी हुई थी और तिनतिन-फिनफिन करती बह रही थी।

वर्तमान युग औद्योगिक विकास का युग है। सभ्यता तेजी से विकसित होती जा रही है। नदियों की पवित्रता गंदे नाले में बदल रही है। मनुष्य की बढ़ती जरूरतें व जनसंख्या ने कूड़ा-करकट नदियों में प्रवाहित करने के बहाने ढूंढ़ लिए हैं। उद्योग-धंधों का मलवा भी नदियों के प्रवाहित कर दिया जाता है। वर्तमान में कई गंदे नाले नदियों से जाकर मिल जाते हैं और जल-प्रदूषण का कारण बनते हैं। हिंदू-सभ्यता का विकास नदियों की पावन धारणा से जुड़ा है। जितनी भी पूजा-सामग्री होती है, वह नदियों में प्रवाहित कर दी जाती है। इस प्रकार ये नदियाँ सड़े नालों में बदल जाती है। शिप्रा, चंबल, नर्मदा, चोरल आदि नदियों के यही हाल है। विकास की सभ्यता ने इन नदियों को गंदे पानी के नाले में बदल दिया है। इसके अन्य कारण महत्वाकांक्षाओं का बढ़ना, धार्मिक, आस्थाएं, बढ़ती जनसंख्या आदि हैं।

आज जिसे पश्चिमी प्रभाव में आकर हम विकास की औद्योगिक सभ्यता कह रहे है वह वास्तव में उजाड़ की अपसभ्यता है। विकास की इस अंधी दौड़ ने हमारी पूरी जीवन-पद्धति को तहस-नहस करके रख दिया है। इसके बीज, यूरोप तथा अमेरिका में हैं। वे खाऊ-उजाड़ू सभ्यता में विश्वास करते हैं। वहां कोई जीवन-मूल्य नहीं है। आधुनिक औद्योगिक विकास ने हमें अपनें जन-जीवन से अलग कर दिया है। सही मायने में हम उजड़ रहे हैं। हमारे नदी-नाले सूख गए हैं, पर्यावरण प्रदूषित हो गया है। जिसके कारण विकास की औद्योगिक सभ्यता उजाड़ की अपसभ्यता बनकर रह गई है। इस विकास ने धरती के तापमान को तीन डिग्री सेल्सियस बढ़ा दिया है। वातावरण को गरम करने वाली ये गैसे सबसे ज्यादा यूरोप और अमेरिका से निकली हैं। अमेरिका अपनी खाऊ-उज़ाड़ू जीवन-पद्धति पर कोई समझौता नहीं करेगा।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

'नयी दुनिया' समाचारपत्र की लाइब्रेरी से कमलेश जैन और अशोक जोशी ने धरती के वातावरण को गरम करने वाली इस खाऊ-उजाड़ू सभ्यता की जो कतरने निकाली हैं उनसे यह पता चलता है कि मालवा की धरती गंभीर क्यों नहीं है और क्यों यहां डग-डग रोटी और पग-पग नीर नहीं है। क्यों हमारे समुद्रों का पानी गरम हो रहा है? क्यों हमारी धरती के ध्रुवों पर जमी बर्फ पिघल रही है? क्यों हमारे मौसमों का चक्र बिगड़ रहा है? क्यों लद्दाख में बर्फ की जगह पानी गिरा? क्यों बाड़मेर के गांव डूब गए। क्यों अमेरिका में अधिक गर्मी पड़ रही है? इसका कारण है गैसों द्वारा तापमान का बढ़ना।

लेखक की पर्यावरण संबंधी चिंता सिर्फ मालवा तक न रहकर सार्वभौमिक हो गई है। अमेरिका की खाऊ-उजाड़ू जीवन पद्धति ने दुनिया को इतना प्रभावित किया है कि हम अपनी जीवन-पद्धति, संस्कृति, सभ्यता तथा अपनी धरती को उजाड़ने में लगे हुए। आधुनिक औद्योगिक विकास ने हमें अपनी जड़-जमीन से अलग कर दिया है। पर्यावरण को विनाश से बचाने के लिए पर्यावरण के प्रति लोगों को सचेत किया जा सकता है। (1) घर का कूड़ा-करकट इधर-उधहर न फेंकें। (2) फैक्ट्रियों का मलवा तथा धुआं व शोर से बचकर रहा जाए। वृक्षों का रोपण किया जाए। आवश्यकताओं को सीमित किया जाए। यूरोपीय-सभ्यता का अनुकरण न किया जाए। 'मुड़ों प्रकृति की ओर, बढ़ो मनुष्यता की ओर' इस विषय में चेतना जागृत की जाए।

''मालवा धरती गहन गंभीर, डग-डग रोटी, पग-पग नीर'' पंक्ति में लेखक ने प्राचीन मालवा की उस स्थिति की चर्चा की है जो सुखी व समृद्धिशाली थी मिट्टी, वर्षा, नदियाँ सभी सुख का आधार थे। मालवा अपनी सुख-समृद्धि एवं सम्पन्नता के लिए विख्यात था। प्राचनी मालवा की धरती गंभीरता से प्राकृतिक सुषमा को उकेरती थी। कदम-कदम पर जीवन हरियाली का प्रतीक था। इतना पानी था जो मालवा की सुख-समृद्धि का आधार था।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. मालवा में जब बरसात की झड़ी लगी रहती है, तब मालवा के जनजीवन पर इसका क्या असर पड़ता है?
2. अब मालवा में वैसा पानी नहीं गिरता जैसा गिरा करता था। उसके क्या कारण हैं?
3. 'मालवा में विक्रमादित्य, भोज और मुंज, रिनसों के बहुत पहले हो गए।' पानी के रखरखाव के लिए उन्होंने क्या प्रबंध किए?
4. 'अपना मालवा' पाठ के आधार पर नर्मदा के विभिन्न रूपों का वर्णन कीजिए।
5. 'नयी दुनिया' की लाइब्रेरी से किस तथ्य का पता चलता है?
6. 'अमेरिका की घोषणा है कि वह अपनी खाऊ-उजाड़ू जीवन पद्धति पर कोई समझौता नहीं करेगा।' इस घोषणा पर अपनी टिप्पणी दीजिए।
7. नवरात्र की पहली सुबह को लेखक ने किस प्रकार व्यक्त किया है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

1. लेखक ने शिप्रा नदी को कालिदास की शिप्रा क्यों कहा है। उसकी क्या विशेषता है?
2. बचपन में पितृपक्ष और नवरात्र पर लेखक ने पानी को किस रूप में देखा था?

निबंधात्मक प्रश्न

1. हमारी आज की सभ्यता इन नदियों को अपने गंदे पानी को नाले बना रही है।' क्यों और कैसे?
2. हमारे आज के इंजीनियर ऐसा क्यों समझते हैं कि वे पानी का प्रबंध जानते हैं और पहले जमाने के लोग कुछ नहीं जानते थे?
3. लेखक को क्यों लगता है कि 'हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह उजाड़ की अपसभ्यता है?' आप क्या मानते हैं?
4. धरती का वातावरण गरम क्यों हो रहा है? इसमें यूरोप और अमेरिका की क्या भूमिका है? टिप्पणी कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

1. 'अपना मालवा' पाठ का उद्देश्य स्पष्ट करें।
2. लेखक की पर्यावरण संबंधी चिंता सिर्फ मालवा तक सीमित न होकर सार्वभौमिक हो गई है- स्पष्ट कीजिए।
3. आधुनिक औद्योगिक विकास हमें अपनी जड़-जमीन से अलग कर रहा है। पर्यावरण को विनाश से बचाने के लिए आपके विचार से क्या-क्या प्रयास किए जा सकते हैं?
4. 'मालवा' धरती गहन गंभीर उग-डग रोटी पग-पग नीर' मालवा के विषय में यह कहावत क्यों कही गई है?

Downloaded from www.studiestoday.com